Day-2
History-III

(दूसरा-दिन) (1)

मोहम्मद बिन-तुगलक (~~दूसरा दिन~~)

अलाउद्दीन के भाँति ही मोहम्मद तुगलक भी साम्राज्य-वादी था। खुरासानी दरबारियों के आमन्त्रण पर उसने खुरासान और इराक को जीतने के लिए एक बड़ी सेना तैयार करनी शुरू कर दी। बर्नी लिखता है कि दीवान-ए-अर्ज (सैन्य विभाग) में 3,70,000 सैनिकों को भर्ती किया। जिनको राज्य द्वारा पूरे वर्ष वेतन दिया गया। ~~इसके अतिरिक्त चमनाई नेता~~ खुरासान विजय का विचार से अपार धन की क्षति हुई।

मोहम्मद-बिन-तुगलक के शासन के शुरुआती दिनों में दो विद्रोह हुए। जिनको सुल्तान ने सफलतापूर्वक दबा दिया। गियासुद्दीन तुगलक की बहिन के पुत्र बहाउद्दीन गुरशाप ने सागर में विद्रोह किया। उसने सुल्तान की अधीनता स्वीकार करने से इन्कार कर दिया, परन्तु शाही फौज ने उसे गिरफ्तार करके दिल्ली भेज दिया जहाँ उसे जिन्दा जला दिया गया। इससे भी अधिक खतरनाक विद्रोह एक वर्ष ~~पूर्व~~ के पश्चात उच्छ, सिन्ध और मुल्तान के जागीरदार किश्लू खाँ ने किया। मोहम्मद बिन तुगलक उस समय दौलताबाद मे था। उसने दिल्ली होकर मुल्तान पर आक्रमण किया और किश्लू खाँ को पराजित किया।

इन दोनो विद्रोहो को क्रूरतापूर्वक दबाने पर भी राज्य मे विद्रोह होने नही रुके और न ही बाद-

P.T.O

में होनेवाले विद्रोहों को सुल्तान दबा सका। अनेक हिन्दू तथा मुसलमान सूबेदारों ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया। ~~1335 ई. में~~

बंगाल में भी फखरुद्दीन मुबारक शाह ने 1338 ई. में अपने नाम से सिक्के चलवाए। सुल्तान अन्य समस्याओं में उलझा हुआ था। इसी कारण बंगाल के विरुद्ध कार्यवाही न कर सका और बंगाल स्वतंत्र हो गया। अवध और जफराबाद 1340-41 में स्वतंत्र हो गया। परन्तु इन सभी प्रयास में साम्राज्य के अनेक संसाधनों का नुकसान हुआ था और सुल्तान की काफी शक्ति नष्ट हो गई।

इनके अतिरिक्त सुल्तान को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। विजयनगर द्वारा भी मुस्लिम शासन का विरोध किया गया। देवगिरी में विदेशी अमीरों ने उसकी मुश्किलें और बढ़ा दी। अलाउद्दीन बहमन शाह ने अगस्त 1347 में बहमनी साम्राज्य की स्थापना की। जब सुल्तान थट्टा में विद्रोह को दबाने में व्यस्त था तब उसे तीव्र ज्वर हुआ और 20 मार्च 1351 को उसकी मृत्यु हो गई।

मोहम्मद तुगलक सम्पूर्ण शासन के दौरान समस्याओं से घिरा रहा और अपनी किसी भी योजना को कोई अंजाम न दे सका और एक असफल शासक सिद्ध हुआ।